(ब) कविताओं की विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर

1. (1) आत्मपरिचय
(2) एक गीत-दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

—हरिवंश राय बच्चन

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कविता के साथ

प्रश्न 1. कविता एक ओर जग-जीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर 'मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ'— विपरीत से लगते इन कथनों का आशय क्या है ?

उत्तर—कविता एक ओर जग-जीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ विपरीत लगने वाले इन कथनों का आशय है कि कवि भी एक सामाजिक प्राणी है समाज में रहते हुए सामाजिक जिम्मेदारियों और कर्त्तव्यों को बखुबी निभा रहा है और भविष्य में भी निभाने की

Scanned with CamScanner

चाहत रखता है किन्तु हर प्राणी की अपनी व्यक्तिगत निजी आकांक्षाएँ होती हैं। जिसकी पूर्णता के लिए वह किसी का हस्तक्षेप पसंद नहीं करता है, नजरअंदाज करता है। उसी प्रकार कवि की व्यक्तिगत जिंदगी में शृंगारपरक प्रेम का विशेष महत्व है जिसकी प्राप्ति के लिए अपना ध्यान प्रेम में ही केन्द्रित रखना चाहता है ऐसे में प्रेम विरोधी रूढ़िवादियों द्वारा दी जाने वाली ढलाहनाओं और चुनौतियों को ध्यान नहीं देता है। अंततः वह सामाजिक एवं पारिवारिक जिम्मेदारियों और निजी प्रेम-प्रसंग के बीच संतुलन बनाकर जीवन जीने में प्रयासरत है।

प्रश्न 2. ''जहाँ पर दाना रहते हैं, वही नादान भी होते हैं''— कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा ?

(CBSE (Outside) 2010)

उत्तर—''जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं'' कवि ने ऐसा इसलिए कहा होगा क्योंकि जिस प्रकार हर सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार समाज में दो तरह के लोग होते हैं, एक ज्ञानी (उर्दू में दाना का मतलब) और दूसरा अज्ञानी। सभी का अपना-अपना अस्तित्व होता है। ज्ञानी सत्य की खोज में ज्ञान प्राप्ति में लगे होते हैं तो अज्ञानी सांसारिक भौतिकवादी होकर भोग-विलास में लगे होते हैं। दोनों ही समाज के लिए अनिवार्य हैं तभी समाज का संतुलन है।

प्रश्न 3. ''मैं और, और जग और कहाँ का नाता''—पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता बताइए।

उत्तर—''मैं और, और जग और कहाँ का नाता'' पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता काव्य सौंदर्य में प्रयुक्त यमक अलंकार के कारण है, जहाँ 'और' शब्द के तीन अलग-अलग अर्थ हैं—

(1) पहले और में 'मैं और' अर्थात् भिन्न। अर्थात् मैं संसार से भिन्न हूँ, अलग हूँ।

(2) दूसरा और में भिन्न और जग यहाँ और योजक शब्द है जिसका अर्थ तथा है।

(3) जग और कहाँ का नाता में और शब्द विशिष्टता के लिए प्रयुक्त हुआ है। इसमें जग के साथ विशेष नाता नहीं है, यह बताया गया है। इस प्रकार काव्य में यमक अलंकार द्वारा शिल्प सौंदर्य किया गया है।

प्रश्न 4. 'शीतल वाणी में आग' के होने का क्या अभिप्राय है ?

[CBSE (Outside) 2008 (C), Delhi 11, (Foreign) 14]

अथवा

''शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ''— इस कथन से कवि का क्या आशय है ?

उत्तर— 'शीतल वाणी में आग'— के होने का अभिप्राय है कि कवि की वाणी में कोमलता और मधुरता है किन्तु हृदय में प्रेम के संदर्भ में चलने वाले अंतर्द्वंद्व के कारण प्रेमरहित संसार के प्रति असंतोष और विद्रोह की भावना भी है। अतः कवि अपनी शीतल वाणी से ही अपने मन की भड़ास को निकालकर लोगों में प्रेम की ज्वाला प्रदीप्त करना चाहता है। इस प्रकार विरोधाभास स्पष्ट दृष्टिगोचर है।

प्रश्न 5. बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे ? **[CBSE (Outside) 2008]**

उत्तर—बच्चे इस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे कि सुबह से भोजन की तलाश में निकले उनके माता-पिता सूर्यास्त की बेला में अब वापस आ रहे होंगे उनके लिए भोजन का दाना लाएँगे। इस आशा में बच्चे नीड़ों से झाँककर अपने माता-पिता की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

प्रश्न 6. कविता में 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'— की आवृत्ति से कविता की किस विशेषता का पता चलता है ?

उत्तर— 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' की आवृत्ति प्रकृति के क्रियाकलापों की ओर सतत् गतिशील होने का संकेत करती है। जिसका संबंध मानव जीवन से है। समय गतिशील है। दिन ढलने के साथ ही रात्रि का आगमन निश्चित है। अतः मानव को अपने सभी कार्य निश्चित समय अंतराल में संपन्न कर लेना चाहिए। जिस प्रकार पथिक अपने लक्ष्य के लिए और पक्षी अपने बच्चों की खातिर नीड़ों की ओर जाने में चंचलता, गतिशीलता दिखाते हैं। दिन का जल्दी-जल्दी ढलना मानवीय हृदय में जोश, उत्साह और प्रेरणा का कार्य कर रहा है जो कवि के लिए महत्वहीन है।

Scanned with CamScanner

कविता के आस-पास

प्रश्न 1. संसार में कष्टों को सहते हुए भी खुशी और मस्ती का माहौल कैसे पैदा किया जा सकता है ?

उत्तर—सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य हर संबंध का निर्वाह करता है। संसार में अनगिनत कष्ट हैं। उसे जीवन में अनेक तरह के कष्टों का सामना करना पड़ता है। कष्ट सहना मानव की नियति है। सुख-दुख समय के अनुसार आते-जाते रहते हैं। मनुष्य को दुखों से परेशान नहीं होना चाहिए क्योंकि दुखों के बिना सुख की सच्ची अनुभूति नहीं पाई जा सकती है। उन कष्टों के बीच प्रेम और मस्ती की दीवानगी के सहारे खुशी से जिया जा सकता है। अत: मनुष्य को संतुलित तथा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर जीवन को उल्लासपूर्ण बनाना चाहिए।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'आत्मपरिचय' कविता में कवि हरिवंश राय बच्चन ने अपने व्यक्तित्व के किन पक्षों को उभारा है ?

उत्तर—'आत्मपरिचय' कविता के माध्यम से कवि हरिवंश राय बच्चन ने अपने व्यक्तित्व के निम्नलिखित पक्षों को उभारा है—

1. कवि अपने जीवन में मिली आशाओं-निराशाओं से संतुष्ट है।
2. कवि अपनी धुन में मस्त रहने वाला व्यक्ति है।
3. कवि संसार को मिथ्या समझते हुए हानि-लाभ, यश-अपयश, सुख-दुख को समान समझता है।
4. कवि संतोषी प्रकृति का व्यक्ति है। वह वाणी के माध्यम से अपना आक्रोश प्रकट करता है।

प्रश्न 2. 'आत्मपरिचय' कविता पर प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर—'आत्मपरिचय' कविता के रचयिता हरिवंश राय बच्चन का मानना है कि स्वयं को जानना दुनिया को जानने से ज्यादा कठिन है। समाज से व्यक्ति का नाता खट्टा-मीठा तो होता ही है। संसार से पूरी तरह निरपेक्ष रह पाना संभव नहीं है। दुनिया अपने व्यंग्य-बाण तथा शासन-प्रशासन चाहे जितना कष्ट दे, पर दुनिया से कटकर मनुष्य रह भी नहीं पाता है क्योंकि उसकी अस्मिता, उसकी अपनी पहचान, उसका परिवेश ही उसकी दुनिया है। वह अपना परिचय देते हुए लगातार दुनिया से अपने दुविधात्मक और द्वंद्वात्मक संबंधों का मर्म उद्घाटित करता चलता है। वह पूरी कविता का सार एक पंक्ति में कह देता है कि दुनिया से मेरा संघर्ष प्रीतिकलह का है, मेरा जीवन विरुद्धों का सामंजस्य है।

प्रश्न 3. जग किन्हें पूछता है और क्यों ?

उत्तर—जग उन्हीं लोगों को पूछता है जो उनकी बातें करते हैं। आशय यह है कि संसार में सामाजिक भावनाओं का महत्व है, व्यक्तिगत भावनाओं का नहीं। मनुष्य के निजी प्रेम संबंधों को समाज सम्मान नहीं देता है। कविता में निजी सुख-दुख को प्रकट करना बुरा माना गया है।

प्रश्न 4. कवि को संसार अपूर्ण क्यों प्रतीत होता है ? वह क्या चाहता है ?

उत्तर—कवि भावनाओं को महत्व देता है। वह सांसारिक बंधनों को नहीं मानता है। वह वर्तमान संसार को उसकी शुष्कता एवं नीरसता के कारण नापसंद करता है। वह प्रेम की कोमल भावना में जीना चाहता है। वह बार-बार अपनी कल्पना का संसार बनाता है तथा प्रेम में बाधक बनने पर उन्हें मिटा देता है। वह प्रेम को सम्मान देने वाले संसार की रचना करना चाहता है।

प्रश्न 5. इस कविता में किसे नादान कहा गया है और क्यों ?

उत्तर—इस कविता में सांसारिकता के दाने को चुगने में उलझे मनुष्य को नादान कहा गया है। कवि के अनुसार जो सांसारिक मनुष्य निरा भोगी होता है, वह नादान होता है। कवि भावनामय संसार को सार्थक मानता है, प्रेम की कोमल दुनिया को सच्ची दुनिया मानता है।

प्रश्न 6. 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !' कविता का उद्देश्य बताइए।

उत्तर—यह गीत प्रसिद्ध कवि हरिवंश राय बच्चन की कृति 'निशा-निमंत्रण' से लिया गया है। यह कविता प्रेम के महत्व पर प्रकाश डालती है। कवि के अनुसार प्रेम की तरंग मनुष्य के जीवन में उत्साह, उमंग और भावना की हिलोर पैदा करती है। किसी प्रिय आलंबन या विषय से भावी साक्षात्कार का आश्वासन ही हमारे

Scanned with CamScanner

प्रयास में गति भर सकता है। इससे हम शिथिलता और फिर जड़ता को प्राप्त होने से बच जाते हैं। प्रेम के कारण ही मनुष्य को दिन-जल्दी-जल्दी ढलता महसूस होता है। यदि जीवन में कोई प्रिय प्रतीक्षा करता न मिले तो जीवन शिथिल हो जाता है।

प्रश्न 7. कवि अपने किस सीखे ज्ञान को भुलाना चाहता है ?

उत्तर—कवि सांसारिकता के ज्ञान को भुलाना चाहता है। आज तक उसने दुनिया से छल-कपट, स्वार्थ, मोह और धन कमाने की कला सीखी है। आज कवि को लगता है कि ऐसा ज्ञान व्यर्थ है। अत: वह इस दुनियादारी को भूलना चाहता है।

प्रश्न 8. थका पंथी क्या सोचकर जल्दी चलने लगता है ? **(CBSE 2010)**

उत्तर—थका हुआ यात्री अपने प्रियजनों से शीघ्र मिलना चाहता है। उसे अपनी मंजिल सामने नजर आती है तब उसकी गति अपने-आप तेज हो जाती है। उसके मन में यह डर भी होता है कि कहीं रात न हो जाए, यह डर भी उसके कदमों की गति को तेज कर देता है।

प्रश्न 9. 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि कवि के कदमों में शिथिलता और हृदय में विह्वलता का क्या कारण है ? **(AI CBSE 2013)**

उत्तर—जीवन में किसी प्रिय का न होना ही कवि के कदमों में शिथिलता और उर में विह्वलता का कारण है। चिड़िया के उर में विह्वलता इसलिए है क्योंकि उसके बच्चे घोसले में उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं और कवि के कदमों में शिथिलता इसलिए है क्योंकि उसके घर पर उसकी कोई प्रतीक्षा नहीं कर रहा है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. उचित शब्दों का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. ..... हरिवंश राय बच्चन की श्रेष्ठ रचना है। (मधुशाला / जनता का आदमी)
2. 'बच्चन ग्रंथावली' को ..... खण्डों में विभाजित किया गया है। (पाँच / दस)
3. मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ, फिर भी जीवन में ..... लिए फिरता हूँ। (प्यार/ संदेश)
4. आत्म परिचय ..... से लिया गया है। (सुन्दरवन/ निशा निमंत्रण गीत संग्रह)
5. बच्चन की प्रारंभिक रचनाओं में ..... मस्ताना पन पाया जाता है। (मध्य युगीन फारसी के कवि उमर खय्याम का / उत्तर मध्य युगीन के कवि मिर्जा गालिब)

उत्तर—1. मधुशाला, 2. दस, 3. प्यार, 4. निशा निमंत्रण गीत संग्रह, 5. मध्य युगीन फारसी के कवि उमर खय्याम का।

प्रश्न 2. सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. क्या भूलूँ क्या याद करूँ के कवि है—
(a) गिरिजा कुमार माथुर (b) केदारनाथ अग्रवाल
(c) जयशंकर प्रसाद (d) हरिवंश राय बच्चन।

2. हरिवंश राय बच्चन का जन्म सन् में हुआ—
(a) 27 नवम्बर, 1907 (b) 18 नवम्बर, 1910
(c) 5 मई, 1921 (d) 9 अप्रैल, 1936।

3. बच्चन के साहित्य में कविता का विशेष गुण पाया जाता है—
(a) व्यंग्यात्मक (b) ओज
(c) सहजता और संवेदनशीलता (d) सकारात्मक।

4. 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है—
(a) मुंशी प्रेमचंद (b) हरिवंश राय बच्चन
(c) महादेवी वर्मा (d) नलिनी सिंह ।

5. हैमलेट, जनगीता, मैकबैथ, का अनुवाद किया है—
(a) नटवर सिंह (b) सुमेरू सिंह
(c) हरिवंश राय बच्चन (d) गजानन माधव मुक्तिबोध।

उत्तर—1. (d), 2. (a), 3. (c), 4. (b), 5. (c).

Scanned with CamScanner

3. (1) कविता के बहाने
(2) बात सीधी थी पर

—कुँवर नारायण

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कविता के साथ

प्रश्न 1. इस कविता के बहाने बताएँ कि 'सब घर एक कर देने के माने' क्या हैं ?

(CBSE 2009)

उत्तर—इस कविता के बहाने में 'सब घर एक कर देने के माने' अर्थात् जाति-धर्म, छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, अपने-पराए के बीच के भेद को मिटाकर आपसी एकता, भाई-चारा, सामाजिक व धार्मिक समरसता लाना है। नन्हें बच्चे ऐसे भेद-भाव, अलगाव व मन-मुटाव की भावना से अनभिज्ञ सबसे मेल-जोल बढ़ाकर खेलते हैं उसी प्रकार कवि हृदय उपरोक्त वर्णित भेदभाव से रहित देश व समाज को एकसूत्र में बाँधने के लिए ही वर्णों, शब्दों और वाक्यों के खेल करते हुए एक प्रेरक काव्य रचना करता है। बच्चों के खेल की सीमा अनंत होती है उसी तरह कवि की कल्पना और संभावनाएँ अनंत होती हैं।

प्रश्न 2. 'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या संबंध बनता है ?

उत्तर—'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से गहरा संबंध है। कविता की उड़ानें वास्तव में कवि हृदय की भावनाएँ, उसके मस्तिष्क की सोच, विचार, कल्पनाएँ उसके अंतर्चेतना की आकांक्षाएँ हैं जो असीमित और अपरिमित हैं। खिलना विकास का प्रतीक है अत: पुष्प के खिलने से वातावरण सुरभित होता है और मानव मात्र में ताजगी का अहसास दिलाता है उसी प्रकार कविता की उड़ानें मानवमात्र के मन, मस्तिष्क और हृदय की उड़ान का प्रतिनिधित्व कर उनके व्याकुल, संतप्त, व्यथित हृदय, मन-मस्तिष्क की तृष्णा को नई ऊर्जा और आशाएँ प्रदान कर शांति व सुकून प्रदान करती हैं।

प्रश्न 3. कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं ?

उत्तर—कविता और बच्चे को समानांतर रखने के कई कारण हो सकते हैं—

कविता	बच्चे
1. कवि की कल्पना, शब्द-सीमा का क्षेत्र असीमित व अनंत होता है।	1. बच्चों के खेल के तौर-तरीके और क्षेत्र भी सीमित नहीं होते हैं।
2. कवि घर-बाहर, प्रकृति, जड़-चेतन, काल, इतिहास अनेक विषयों पर काव्य-लेखन कर सकता है।	2. बच्चे भी घर-बाहर, प्रकृति के बीच, सजीव, निर्जीव चीजों से, इतिहास के पात्रों के रूप में खेलते हैं।
3. कवि का उद्देश्य सामाजिक व धार्मिक समरसता व मानवता, एकता स्थापित करना होता है।	3. बच्चे भी बिना अपने-पराए के भेद किए सब एक साथ, धर्म व समाज के साथ खेलते हैं।

प्रश्न 4. कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' क्या होते हैं ?

अथवा

'बिना मुरझाए महकना' कवि कुँवर नारायण जी ने किसके संदर्भ में कहा है ? इसका क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' यह होता है कि फूलों से ही कविता खिलती है किन्तु फूल को एक दिन मुरझाना ही पड़ता है किन्तु कविता कभी नहीं मुरझाती है। कविता के भाव, विचार, संवेदनाएँ, आशाएँ, उसके विभिन्न रस अनंत काल तक लोगों के हृदय, मन, मस्तिष्क में जीवंत रहकर ताजगी

Scanned with CamScanner

प्रदान करते हैं। हजार वर्ष पूर्व की कविता भी पढ़ते-सुनते वक्त वही रसोत्पादन करती है जो पूर्व में थी। फूलों की महक जल्दी ही समाप्त हो जाती है किन्तु कविता की महक युगों-युगों तक देश व समाज में बिखरती रहती है।

प्रश्न 5. 'भाषा को सहूलियत से बरतने' से क्या अभिप्राय है ? (A.I. CBSE 2017)

उत्तर—'भाषा को सहूलियत से बरतने' का अभिप्राय है कि स्वयं को उत्कृष्ट और श्रेष्ठ साबित करने के लिए बनावटी, मुहावरेदार, कठिन शब्दावली या महिमामंडित तरीके से वाचन न करते हुए जनमानस अनुरूप, सरल, सहज, व्यावहारिक, शब्दावलियों का प्रयोग कर सभी के समझने योग्य वाचन करें।

प्रश्न 6. बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किन्तु कभी-कभी भाषा के चक्कर में 'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है' कैसे ?

उत्तर—बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं। भाषा के बिना बातों का अस्तित्व आधारहीन है। भाषा के माध्यम से ही संप्रेषण संभव होता है। किन्तु भाषा यदि कठिन, चमत्कारिक, अनेकार्थी शब्दावलियों, श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों के प्रयोग द्वारा प्रस्तुत की जाए तो सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है।

प्रश्न 7. बात (कथ्य) के लिए नीचे दी गई विशेषताओं का उचित बिंबों/मुहावरों से मिलान कीजिए।

बिंब/ मुहावरा		विशेषता
1. बात की चूड़ी मर जाना		कथ्य और भाषा का सही सामंजस्य बनना
2. बात की पेंच खोलना		बात का पकड़ में न आना
3. बात का शरारती बच्चे की तरह खेलना		बात का प्रभावहीन हो जाना
4. पेंच को कील की तरह ठोंक देना		बात में कसावट का न होना
5. बात का बन जाना		बात को सहज और स्पष्ट करना।
उत्तर— 1. बात की चूड़ी मर जाना	—	बात का प्रभावहीन हो जाना
2. बात की पेंच खोलना	—	बात को सहज और स्पष्ट करना
3. बात की शरारती बच्चे की तरह खेलना	—	बात का पकड़ में न आना
4. पेंच को कील की तरह ठोंक देना	—	बात में कसावट का न होना
5. बात का बन जाना	—	कथ्य और भाषा का सही सामंजस्य बनाना।

कविता के आस-पास

प्रश्न 1. बात से जुड़े कई मुहावरे प्रचलित हैं। कुछ मुहावरों का प्रयोग करते हुए लिखें।

उत्तर—(क) बात का बतंगड़ बनाना—मीडिया वाले अपने चैनल या अखबार को बिकाऊ बनाने के लिए बात का बतंगड़ बना देते हैं।

(ख) बात बढ़ाना—अच्छा है, मामला यहीं सुलटा लो। बेकार में बात बढ़ाने से कोई लाभ नहीं होगा।

(ग) बातें बनाना—ये हास्य-कवि बातें बनाने में बड़े उस्ताद होते हैं।

(घ) बात का धनी होना—यह सेठ बात का धनी है। जो कह देगा, करके दिखाएगा।

(ङ) बात रखना—छोटो को बड़ों की बात रखना चाहिए।

(च) लातों के भूत बातों से नहीं मानते— आजकल के बच्चे तो इस तरह के हैं कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'कविता के बहाने' काव्य में कविता की उड़ान तथा चिड़िया की उड़ान में क्या अंतर है ?

उत्तर— कविता की उड़ान सीमाहीन और अनंत है, क्योंकि कविता में मन भावों एवं असीम कल्पनाओं के पंख लगाकर उड़ता है और इसकी उड़ान सब जगह पर हो सकती हैं।

जबकि चिड़िया की उड़ान में चिड़िया के पंखों की एक निश्चित और सीमित सामर्थ्य होता है। चिड़िया एक निश्चित सीमा के बाद उड़ने में असमर्थ होती है। चिड़िया सब जगह नहीं उड़ सकती।

Scanned with CamScanner

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. उचित शब्दों का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. कविता एक ..... है। (सुझाव / उड़ान)
2. आकारों के आस-पास ..... है। (काव्य संग्रह / कहानी संग्रह)
3. कुँवर नारायण का जन्म ..... में हुआ। (19 सितम्बर, सन् 1927 को उत्तरप्रदेश / 25 सितम्बर, सन् 1937 को मध्यप्रदेश)
4. कुँवर नारायण को ..... से सम्मानित किया गया। (दैनिक पुरस्कार / ज्ञानपीठ पुरस्कार)
5. कविता एक खिलना है, ... बहाने। (फूलों / जड़ों)

उत्तर— 1. उड़ान, 2. कहानी संग्रह, 3. 19 सितम्बर, सन् 1927, उत्तरप्रदेश, 4. ज्ञानपीठ पुरस्कार, 5. फूलों।

प्रश्न 2. सत्य / असत्य कथन छाँटकर लिखिए—

1. 'बात सीधी थी पर' के रचनाकार कुँवर नारायण जी है।
2. 'चक्रव्यूह' के कवि गिरिजाकुमार माथुर है।
3. कविता के पंख लगा उड़ने के माने चिड़िया क्या जाने ?
4. कुँवर नारायण की कविता 'बात सीधी थी पर' में भाषा की सहजता देखने में मिलती है।
5. गर्द से ढँकी हर पुरानी किताब खोलने की बात कहने वाले कुँवर नारायण ने सन् 1950 के आस-पास काव्य लेखन की शुरुआत की।

उत्तर— 1. सत्य, 2. असत्य, 3. सत्य, 4. सत्य, 5. सत्य।

4. कैमरे में बंद अपाहिज

—रघुवीर सहाय

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कविता के साथ

प्रश्न 1. कविता में कुछ पंक्तियाँ कोष्ठकों में रखी गई है—आपकी समझ में इसका क्या औचित्य है ?

उत्तर—1. 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता वास्तव में दूरदर्शन कार्यक्रम या मंच पर दिखाए जाने वाले नाटक को छंदबद्ध काव्य में रचना की गई है जिसमें प्रसारण या मंचन के दौरान कैमरामैन, अपाहिज एवं संचालक कर्मियों से कही जाने वाली बातें जो नेपथ्य पर हो रही थीं, उसे कोष्ठक में रखा गया है जिससे कविता को पढ़ते समय पाठक उस दृश्यांकन का दर्शक की ही तरह रसास्वादन कर सके। जैसे— कैमरा दिखाओ इसे बड़ा-बड़ा, कैमरा बस करो, नहीं हुआ, रहने दो—कैमरामैन से कहा गया।

2. हम इशारे से बताएँगे कि क्या ऐसा ?— यह प्रश्न नहीं पूछा जाएगा—दर्शकों को संबोधित करके।

3. यह अवसर खो देंगे ?

परदे पर वक्त की कीमत है। अपाहिज से कहा गया।

प्रश्न 2. 'कैमरे में बंद अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है—विचार कीजिए। [CBSE (Delhi and Foreign) 2009 (C), (Delhi and Outside) 12, Sample Paper 13]

उत्तर—'कैमरे में बंद अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है। यह निःसंदेह सत्य है कि पत्रकारिता जगत ने समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करने के लिए हर वर्ग विशेष के लोगों को दूरदर्शन के परदे पर स्थान देने के उद्देश्य से अपाहिज के साक्षात्कार का कार्यक्रम आयोजित करके करुणा दिखाई, किन्तु साक्षात्कार में पूछे गए प्रश्नों का स्तर निकृष्टता, ओछापन, बेतुका, अमानवीयता, संवेदनहीनता को प्रदर्शित कर रहा था।

Scanned with CamScanner

"आप क्या अपाहिज हैं ? आपका अपाहिजपन आपको दुःख देता होगा ? आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है ?" ऐसे प्रश्न अपाहिज की पीड़ा को कुरेदने वाले एवं संवेदनहीन हैं साथ ही 'आप अवसर खो देंगे।' 'परदे पर वक्त की कीमत है' जैसे वक्तव्य दूरदर्शन की महत्ता और अपाहिज पर एहसान करने जैसे लगते हैं। जो मात्र एक बनावटीपन है जहाँ करुणा के मुखौटे में क्रूरता को जन्म देता है।

प्रश्न 3. 'हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे' पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है ?

अथवा

इस पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाह रहा है ? **(CBSE (Outside), 2008, 12)**

उत्तर—'हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे' पंक्ति के माध्यम से कवि ने मीडिया वालों/(दूरदर्शन कर्मियों) कार्यक्रम के संचालक पर व्यंग्य किया है। अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने की कहावत को चरितार्थ करने लगे हैं। दूरदर्शन वाले स्वयं को समर्थ शक्तिवान बताकर आम जनता के प्रशंसक बन गए हैं। उनकी कृपा से ही लोगों को परदे पर स्थान मिल सकता है अन्यथा नहीं। उनके अनुसार अपाहिज व्यक्ति की तुलना में वे अधिक समर्थ और बलवान हैं, अतः दुर्बल (अपाहिज) की कमजोरियों को उजागर कर, उस पर कार्यक्रम बनाकर दर्शक दीर्घा के समक्ष उसे लज्जित करने जैसे प्रश्नों को पूछकर, कुरेदकर अपने कार्यक्रम की लोकप्रियता की ओर ध्यान देना किसी तमाशे से कम नहीं है।

प्रश्न 4. यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक, दोनों एक साथ रोने लगेंगे, तो उससे प्रश्नकर्त्ता का कौन-सा उद्देश्य पूरा होगा ?

उत्तर—यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रोने लगेंगे, तो उससे प्रश्नकर्त्ता का रोचक कार्यक्रम आयोजित करने और उसके लोकप्रिय होने का उद्देश्य पूर्ण होगा। उसे लोगों की वाह-वाही और सहानुभूतियाँ मिलेंगी। कार्यक्रम लोकप्रिय होने से प्रसिद्धि और मुँह-मांगी कीमत मिलेगी क्योंकि जिस रस को आधार मानकर कार्यक्रम बनाया जाता है वही रसास्वादन दर्शक, श्रोता या पाठक को पूरी तरह होता है तभी कार्यक्रम की सार्थकता पूर्ण होती है। यहाँ भी वही हुआ अपाहिज की पीड़ा से दुःखी होकर न केवल अपाहिज बल्कि दर्शकों को भी रुलाने का पूर्ण प्रयास था। करुण रस पर आधारित कार्यक्रम में करुणा का प्रवाह होना आवश्यक था।

प्रश्न 5. 'परदे पर वक्त की कीमत है' कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है ?

उत्तर—'परदे पर वक्त की कीमत है' कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति दूरदर्शन वालों के व्यावसायिक नजरिया को रखा है क्योंकि किसी भी कार्यक्रम के प्रसारण में मिनट के हिसाब से और लोकप्रियता की संभावना के आधार पर कीमत रहती है। दूरदर्शन वालों को किसी के दुःख-दर्द, शौहरत, हित-अहित, प्रसिद्धि-बदनामी आदि से कोई सारोकार (मतलब) नहीं होता है उन्हें तो सिर्फ कार्यक्रम की रोचकता, लोकप्रियता और उसे बनाने में लगाए धन से लाभ की वसूली हो जाने से मतलब होता है। अतः वे ऐन केन प्रकारेन अपने कार्यक्रम को प्रसिद्धि दिलाना चाहते हैं।

कविता के आस-पास

प्रश्न 1. यदि आपको शारीरिक चुनौती का सामना कर रहे किसी मित्र का परिचय लोगों से करवाना हो, तो किन शब्दों में करवाएँगे ?

उत्तर—ये मेरा मित्र गोपीनाथ है यह बारहवीं का गणित संकाय का छात्र है। यह इतना मेहनती और सौभाग्यशाली है कि ये पोलियोग्रस्त पैर के बावजूद तैराकी में छत्तीसगढ़ चैम्पियन है। भविष्य में यह अंतर्राष्ट्रीय चैम्पियन बनने के लिए प्रयत्नशील है। इसे देखकर मेरे अंदर भी कुछ नया करने की प्रेरणा मिल रही है और इसी के मार्गदर्शन पर मैं भी आजकल तैराकी सीखने जा रहा हूँ। ऐसा मित्र पाकर मैं स्वयं को खुशनसीब समझता हूँ।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 2. भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
नयी कविता में कोष्ठक, विराम-चिन्हों और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता है। उपर्युक्त पंक्तियों में कोष्ठकों से कविता में क्या विशेष अर्थ पैदा हुआ है ? समझाइए।

उत्तर—नई कविता में कोष्ठक, विराम चिन्हों और पंक्तियों के बीच का स्थान विशेष अर्थ देते हैं। भाव व्यंजना को अधिक स्पष्ट करते हैं। कोष्ठक में लिखा (अभी गीला पड़ा है) यह चौके की वर्तमान स्थिति को इंगित कर रहा है। चौके की ताजगी और स्वच्छता का प्रमाण दे रहा है।

विराम चिन्ह कार्य या क्रियाकलाप की पूर्णता को सूचित करता है।

अपनी रचना

प्रश्न 1. अपने परिवेश के उपमानों का प्रयोग करते हुए सूर्योदय और सूर्यास्त का शब्द चित्र खींचिए।

उत्तर—सूर्योदय—प्रातःकालीन सूर्योदय का दृश्य एक नई नवेली ब्याहता (दुल्हन) की तरह है। सूरज का क्षितिज से ऊपर आने के समय ऐसा लगता है मानो नव ब्याहता दुल्हन अपने खुले केशों (नीला आकाश) में लाल सिंदूर भरी है। अतः आकाश नीली आभा से लालिमायुक्त है। धीरे-धीरे सूरज का ऊपर आ जाना ऐसा लगता है मानो स्वर्ण आभूषणों से सुसज्जित दुल्हन सुनहरी ओढ़नी (चुनरी) ओढ़कर खड़ी हो रही हो। गोरी दुल्हन का सुंदर मुख भी स्वर्ण आभूषणों और सुनहरी चुनरी की आभा से स्वर्ण मुख की तरह दमक रहा हो।

सूर्यास्त—संध्या बेला में क्षितिज में डूबता सूरज पूरी तरह लाल रंग का होता है जो ऐसा लगता है मानो पूरे दिन की थकान से नव-ब्याहता दुल्हन का सिंदूर पसीने से उसके माँग से बहकर पूरे मुख में फैल गया हो और थकान के कारण मुख लाल होकर सूज गया हो। धीरे-धीरे आराम करने की चाहत में वह नीचे बैठना चाह रही हो।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सूर्योदय से पहले आकाश में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं ? 'उषा' कविता के आधार पर बताइए। **[CBSE sample paper 2007, foreign 2009]**

उत्तर—सूर्योदय से पहले आकाश का रंग शंख जैसा नीला था, उसके बाद आकाश राख से लीपे चौके जैसा हो गया। सुबह की नमी के कारण वह गीला प्रतीत होता है। सूर्य की प्रारंभिक किरणों से आकाश ऐसा लगता है मानो काली सिल पर थोड़ी लाल केसर डालकर उसे धो दिया गया हो या फिर काली स्लेट पर लाल खड़िया मिट्टी मल दी गई हो। सूर्योदय के समय सूर्य का प्रतिबिंब ऐसा लगता है जैसे नीले स्वच्छ जल में किसी गोरी युवती का प्रतिबिंब झिलमिला रहा हो।

प्रश्न 2. 'उषा' कविता में भोर के नभ की तुलना किससे की गई है और क्यों ?
[CBSE (Delhi) 2015]

उत्तर—'उषा' कविता में प्रातःकालीन नभ की तुलना राख से लीपे गए गीले चौके से की गई है। इस समय आकाश नम एवं धुँधला होता है। इसका रंग राख से लीपे चूल्हे जैसा मटमैला होता है। जिस प्रकार चूल्हा-चौका सूखकर साफ हो जाता है। उसी प्रकार कुछ देर बाद आकाश भी स्वच्छ एवं निर्मल हो जाता है।

Scanned with CamScanner

8. (1) कवितावली (उत्तर कांड से)
(2) लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप

—तुलसीदास जी

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

पाठ के साथ

प्रश्न 1. 'कवितावली' में उद्धृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है। **[CBSE 2011 (C)]**

अथवा

तुलसीदास के कवित्त के आधार पर तत्कालीन समाज की आर्थिक विषमता पर प्रकाश डालिए। **(CBSE Delhi 2015)**

अथवा

तुलसी युग में भी बेरोजगारी थी। पाठ के आधार पर अपना मन्तव्य लिखिए तथा इस समस्या के समाधान के लिए तुलसीदास जी ने किस भरोसा को जताया है ? **(छ.ग. 2020 सेट C)**

उत्तर—किवदंति है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है और साहित्यकार उस दर्पण को निर्मित करते हैं। यही कार्य तुलसीदास जी ने भी किया है, भारतीय संस्कृति और सभ्यता में साधु, संतों और ईश्वर के भक्तों को दीन-दुखियों का मददगार और मार्गदर्शक माना गया है। यह दायित्व तुलसीदास जी ने बखूबी निभाया है। उन्होंने प्रभु राम की भक्ति करके यह ज्ञान और अनुभव प्राप्त कर लिया था कि प्रभु राम दीन-दुखियों के नाथ हैं। कृपालु हैं इसलिए उन्होंने भुखमरी और बेरोजगारी से पीड़ित आम लोगों, मजदूर, किसान, भिखारी, कलाकार आदि को कहाँ जाए ? क्या करें ? के जवाब में उन्हें भगवान राम की शरण में जाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

प्रश्न 2. पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है— तुलसी का यह काव्य सत्य क्या इस समय का भी युग-सत्य है ? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

उत्तर— तुलसी का यह कथन "पेट की आग का शमन, ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है।" यह इस समय का भी युग सत्य है। शास्त्रों के अनुसार— 'कर्म करो फल की इच्छा न करो' अर्थात् कर्म मानव के हाथ में और फल ईश्वर के हाथ में होता है। किसी क्षेत्र विशेष में भी कर्म सभी समान करते हैं किन्तु सभी को समान फल नहीं मिलता किसी को जल्दी, किसी को देर से, किसी को कम और किसी को ज्यादा। यह बात, इस बात पर आधारित है कि कार्य करने वाले की कुशलता कैसी है ? कर्म की कुशलता में धर्म जुड़ा होता है। किसी सामान्य कार्य में भी सतर्कता और चतुराई आवश्यक होती है। उसी प्रकार कर्म में धर्म, नैतिकता और आशीर्वाद का जब-जब सामंजस्य होता है तभी श्रेष्ठतम् फल प्राप्त होते हैं, अन्यथा किसी एक की भी कमी होने से असंतुलन की अवस्था में फल की कमी देरी या ना मिलने की आशंका होती है। उदाहरण के लिए— फिल्मी दुनिया के संजयदत्त का जीवन अनेक उतार-चढ़ाव से भरा पड़ा है।

प्रश्न 3. तुलसी ने यह कहने की जरूरत क्यों समझी ?

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ / काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ।

इस सवैया में 'काहू के बेटीसों बेटा न ब्याहब' कहते, तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आता ?

उत्तर— धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ / काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ।। तुलसीदास को यह कहने की जरूरत इसलिए पड़ी क्योंकि उस समय में विवाह से पूर्व माता, पिता, जाति व वर्ण विचार अनिवार्य रूप से करते हैं। ऊँच-नीच जाति की मान्यता के कारण बेटी की शादी भी उच्च जाति या समान जाति में करने का विधान था। चूँकि बेटी का विवाह माता-पिता की अनुमति

Scanned with CamScanner

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'धूत कहौ.....' छंद के आधार पर तुलसी दास के भक्त हृदय की विशेषता पर टिप्पणी कीजिए। **(CBSE 2013)**

उत्तर—तुलसीदास पर अपने आराध्य 'राम' की असीम कृपा है। वे संसार के सब संकटों को सहते हुए भी राम के प्रति भक्ति में कमी नहीं आने देते। वे स्वयं को 'राम का गुलाम' कहते हैं। यह दास्य भक्ति का सुंदर उदाहरण है।

प्रश्न 2. 'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' काव्यांश के आधार पर भ्रातृशोक में विह्वल राम की दशा को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए। **(AI CBSE 2008)**

उत्तर—लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम विलाप करने लगे। वे भ्रातृ शोक से विह्वल हो उठे। वे बार-बार उसके त्याग, समर्पण और स्नेह का वास्ता देने लगे। वे लक्ष्मण को अपने साथ लेने के निर्णय पर पछताने लगे। कहने लगे कि मैंने लक्ष्मण को अपनी सेवा में लाकर बहुत भूल की। वे स्वयं को मणिरहित साँप के समान और सूँड-रहित हाथी के समान लाचार कहने लगे। उन्हें भय सताने लगा कि वे वापस अयोध्या जाकर माँ सुमित्रा को क्या उत्तर देंगे। इस प्रकार वे 'शोक' में डूब गए।

प्रश्न 3. 'धूत कहौ, अवधूत कहौ.....' सवैये में तुलसीदास का स्वाभिमान प्रतिबिंबित होता है। इस कथन की पुष्टि कीजिए। **(AI CBSE 2017)**

उत्तर—तुलसीदास जी स्वाभिमानी थे। वे जाति, संप्रदाय, वर्ग-वर्ण के भेदों से ऊपर थे तथा प्रभावशाली लोगों को खरी-खोटी सुनाने में नहीं चूकते थे। उन्होंने हिन्दू धर्म के मनमाने आदेशों को मानने से इंकार कर दिया। इसलिए धर्म के ठेकेदारों ने उन्हें जुलाहा, धूर्त आदि कहकर अपमानित किया। परंतु तुलसीदास झुके नहीं। वे मस्जिद में रात बिताते थे और निश्चिंत होकर रामकथा कहते थे। उन्होंने किसी का अनुचित दबाव मानने की बजाय फक्कड़ बाबा बनकर जीना ठीक समझा। इससे उनके स्वाभिमानी व्यक्तित्व का परिचय मिलता है।

प्रश्न 4. 'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप', काव्यांश में लक्ष्मण के प्रति राम के प्रेम के कौन-कौन से पहलू अभिव्यक्त हुए हैं ? **(AI CBSE 2013)**

उत्तर—राम लक्ष्मण से अगाध प्रेम करते थे। वे उन्हें अपने सब संबंधों से ऊपर मानते थे। वे उन्हें अपना परम सहयोगी और विश्वासपात्र मानते थे। लक्ष्मण राम का दाहिना हाथ थे जिसके बल पर वे बड़ी से बड़ी मुसीबत से टकरा सकते थे।

प्रश्न 5. तुलसी के सवैये के आधार पर प्रतिपादित कीजिए कि उन्हें भी जातीय भेदभाव का दबाव झेलना पड़ा था। **(AI CBSE 2015, 16)**

उत्तर—तुलसीदास को भी उसके जातिवादी समाज ने बहुत प्रताड़ित किया था। समाज ने उनका बहुत बहिष्कार किया था। वे कुछ लोगों द्वारा जाति से बाहर कर दिए गए थे। यहाँ तक कि उन्हें मस्जिद में जाकर सोना पड़ता था।

प्रश्न 6. कुंभकरण के द्वारा पूछे जाने पर रावण ने अपनी व्याकुलता के बारे में क्या कहा और कुंभकरण से क्या सुनना पड़ा ? **(CBSE Delhi 2015)**

उत्तर—कुंभकरण के पूछने पर रावण ने उसे अपनी व्याकुलता के बारे में विस्तारपूर्वक बताया कि किस तरह उसने माता सीता का हरण किया। फिर उसने बताया कि हनुमान ने सब राक्षस मार डाले हैं और महान योद्धाओं का संहार कर दिया है।

उसकी ऐसी बात सुनकर कुंभकरण ने कहा कि अरे मूर्ख! जगत जननी को चुराकर अब तू कल्याण चाहता है। यह संभव नहीं है।

प्रश्न 7. लक्ष्मण-मूर्च्छा प्रसंग के आधार पर तुलसी की नारी-दृष्टि पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'नारी हानि विशेष छति नाहिं' कहकर तुलसीदास ने जो सामाजिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है उस पर अपने विचार एक अनुच्छेद में व्यक्त कीजिए। **(AI CBSE 2010)**

Scanned with CamScanner

आपसदारी

कविता में एक भाव, एक विचार होते हुए भी उसका अंदाज़े बयाँ या भाषा के साथ उसका बर्ताव अलग-अलग रूप में अभिव्यक्ति पाता है। इस बात को ध्यान रखते हुए नीचे दी गई कविताओं को पढ़िए और दी गई फ़िराक की गज़ल/रुबाई में से समानार्थी पंक्तियाँ ढूँढ़िए।

(क) मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों। —सूरदास

(ख) वियोगी होगा पहला कवि
आह से उपजा होगा गान
उमड़ कर आँखों से चुपचाप
बही होगी कविता अनजान —सुमित्रानंदन पंत

(ग) सीस उतारे भुईं धरे तब मिलिहैं करतार —कबीर

उत्तर—(क) आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है
बालक तो हई चाँद पै ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आइने में चाँद उतर आया है।

(ख) तेरे गम का पासे-अदब है
कुछ दुनिया का खयाल भी है
सबसे छिपा के दर्द के मारे
चुपके-चुपके रो ले हैं

(ग) ये कीमत भी अदा करे हैं
हम बदुरुस्ती-ए-होशो-हवास
तेरा सौदा करने वाले दीवाना भी हो ले हैं।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. फ़िराक की रुबाई के आधार पर माँ द्वारा बच्चे को खिलाने और प्रसन्न करने का दृश्य प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर—माँ अपने बच्चे को चाँद का टुकड़ा मानती है। वह उसे अपनी गोदी में लिए आँगन में खड़ी है। कभी वह उसे अपने हाथों पर झुलाती है तो कभी हवा में उछाल देती है। उछलने पर बच्चे के मुँह से प्रसन्नता भरी किलकारी निकल पड़ती है। इस प्रकार यह माँ बच्चे का वात्सल्यपूर्ण दृश्य मनोरम है।

प्रश्न 2. बालक द्वारा चाँद माँगने की जिद का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर—बालक आकाश में खिले चाँद को देखकर उसे पा लेना चाहता है। वह समझता है कि चाँद भी एक खिलौना है। अत: वह जिद बाँध लेता है। माँ उसे बहलाने के लिए दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखलाती है। बच्चा प्रतिबिंब देखकर प्रसन्न हो उठता है।

प्रश्न 3. रुबाइयों के आधार पर घर-आँगन में दीवाली और रक्षाबंधन के दृश्य-बिंब को अपने शब्दों में समझाइए।

(AI CBSE 2008 C)

अथवा

फ़िराक की रुबाइयों में उभरे घरेलू जीवन के बिंबों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। (CBSE 2009)

Scanned with CamScanner

10. (1) छोटा मेरा खेत
(2) बगुलों के पंख

—उमाशंकर जोशी

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

पाठ के साथ

प्रश्न 1. छोटे चौकोने खेत को कागज का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है ? (CBSE 2010)

अथवा

कागज के पन्ने की तुलना छोटे चौकोने खेत से करने का आधार स्पष्ट कीजिए। (CBSE 2014)

उत्तर— छोटे चौकोने खेत को कागज का पन्ना कहने में कवि का अर्थ एक भारतीय किसान की तरह स्वयं को एक कर्मठ और स्वावलंबी बताना है। जिस प्रकार किसान अपने कार्य के प्रति लगनशील होकर अंधड़ के आते ही खेती के कार्य की तैयारी में जुट जाता है, उसी प्रकार कवि की अंतर्चेतना में विचार, प्रेरणा आते ही वह उस विषय वस्तु पर काव्य रचना करने को तत्पर हो जाता है। खेतों में बीज, खाद, पानी डालने से फसल तैयार होती है। उसी प्रकार कवि के विचारों में कल्पना, भाव, शिल्प का प्रयोग करने से कविता का निर्माण होता है।

प्रश्न 2. रचना के संदर्भ में 'अंधड़' और 'बीज' क्या हैं ? (छ.ग. 2020 सेट C)

उत्तर—रचना के संदर्भ में अंधड़ विचारों की संवेदना है, प्रेरणा का स्रोत है जो विशेष विषय वस्तु पर कवि को गहराई से सोचने और उसे शब्दों और पंक्तियों में पिरोने को मजबूर कर देती है।

बीज वह विशेष विषय वस्तु होती है जिसके बारे में कवि पूरी चेतना के साथ भाव के संयोग से शिल्प में अलंकारों, बिम्बों, प्रतीकों के सामंजस्य से शब्द व पंक्ति रूप प्रदान करता है और काव्य रचना गतिशील हो जाती है।

Scanned with CamScanner

2. अमृत धाराएँ फूटतीं।

प्रश्न 2. जहाँ उपमेय में उपमान का आरोप हो, रूपक कहलाता है। इस कविता में से रूपक का चुनाव करें।

उत्तर—1. भावों रूपी आँधी।

2. विचाररूपी बीज।

3. पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

4. कजरारे बादलों की छाई नभ छाया।

5. तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया।

कला की बात

प्रश्न 1. बगुलों के पंख, कविता को पढ़ने पर आपके मन में कैसे चित्र उभरते हैं ? उनकी किसी भी अन्य कला माध्यम में अभिव्यक्ति करें।

उत्तर— विद्यार्थी स्वयं करें।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'छोटा मेरा खेत' कविता में 'बीज गल गया निःशेष' से क्या तात्पर्य है ?

(CBSE MTP 2009)

उत्तर—'बीज गल गया निःशेष' के माध्यम से कवि कहता है कि जब वह कविता का मूलभाव कवि के मन में पूरी तरह रच-बस नहीं जाता, वह कवि निजता से मुक्त नहीं हो पाता है। दूसरे शब्दों में, जब तक कविता के निजी संदर्भ समाप्त नहीं हो जाते हैं और उसकी अपील सार्वजानिक नहीं हो जाती है तब तक वह कविता के रूप में अभिव्यक्त नहीं हो पाता। कवि के अहं का गलना। उसके निजी भावों का दंश नष्ट होना कविता की रचना के लिए अनिवार्य है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 2. कवि ने खेत की तुलना कागज से क्यों की है ? स्पष्ट कीजिए। (AI CBSE 2016)

उत्तर—जैसे खेत में किसी अंधड़ के कारण कोई बीज आ गिरता है, वैसे ही कागज के पन्ने पर किसी अज्ञात भावना के कारण कोई विषय मंडराने लगता है। जैसे खेत में पड़े बीज को उगाने के लिए रसायन चाहिए, वैसे ही भाव को पोषित करने के लिए कल्पना चाहिए। जैसे रसायन से बीज अंकुरित हो जाता है वैसे ही कल्पना से भाव शब्द के रूप में प्रकट हो जाता है।

प्रश्न 3. 'छोटा मेरा खेत' कविता के रूपक को स्पष्ट कीजिए। (CBSE 2009)

उत्तर—कवि अपनी कविता को खेत के उपमान से प्रकट करता है। उसके अनुसार कवि खेत रूपी पन्ने पर भाव रूपी बीज, विचाररूपी जल, और अलंकाररूपी रसायन उड़ेलता है। तभी उसमें से कविता रूपी फसल पैदा होती है।

प्रश्न 4. आशय स्पष्ट कीजिए—

रोपाई क्षण की
कटाई अनंतता की।

(AI CBSE 2010)

उत्तर— इसका आशय यह है कि कविता का मूल भाव क्षण-भर में जन्म ले लेता है। वह किसी विशेष क्षण में कवि के मन से उदित होता है। परंतु उस कविता का आनंद अनंतकाल तक व्याप्त रहता है। काव्य रस वर्तमान में ही नहीं, एक-दो श्रोताओं का ही नहीं, अपितु हमेशा-हमेशा के लिए सभी श्रोताओं को आनंद में सराबोर कर देता है।

Scanned with CamScanner